ज्ञान तत्व

MARGDARSHAK
मार्गदर्शक
"शराफत से समझदारी की ओर"

पंजीयन संख्या : 68939/98
अंक : 20
वर्ष : 24

पाक्षिक पत्रिका

458

सत्यता और निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

समाज शास्त्र

राजनीति शास्त्र

धर्म शास्त्र

अर्थ शास्त्र

सम्पादक :
बजरंग लाल अग्रवाल
रामानुजगंज (छ.ग.)

पोस्ट की तारीख : 15-10-2024 प्रकाशन की तारीख : 15-10-2024

पाक्षिक का मूल्य : १०/= (दस रुपए)

अनुक्रमणिका

4 2. शांति और आतंक में फर्क:

7 6. महिला समाज को ब्लैकमेल करती मुट्ठी भर महिलाएं:

10 11. राजनीति मुक्त समाज सारी दुनिया के लिए एकमात्र विकल्प:

15 19. राजनीतिक हों या सामाजिक, समस्याओं का समाधान केवल समाज के पास:

17 21. देश की सुरक्षा हेतु साम्यवाद से बचना बहुत जरूरी:

19 24. भारत को खोखला कर रहे विदेशी लोग:

20 जूम चर्चा:

1. तंत्र की गुलामी से संविधान की मुक्ति जायज है:

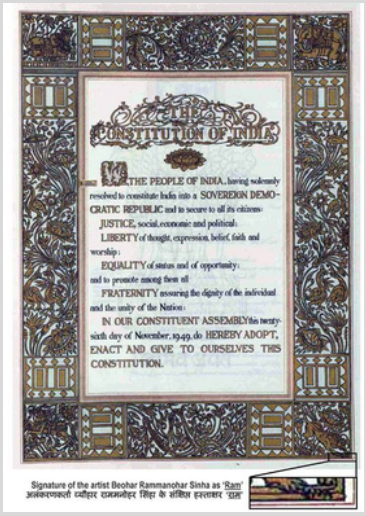

आज दोपहर के संवैधानिक सत्र में मैं कुछ अपने विषय में बताना चाहता हूँ। मैं पूरी तरह वैचारिक और सांस्कृतिक धरातल पर हिंदू हूँ, वर्ण व्यवस्था के आधार पर मैं ब्राह्मण हूँ क्योंकि मैं अपने को विचार मंथन तक सीमित रखता हूँ, विचार प्रचार से दूर रहता हूँ । मैं किसी प्रकार की क्रिया में संलग्न नहीं होता। आश्रम व्यवस्था के आधार पर मैं संन्यास आश्रम में हूँ, मेरा राजनीति से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। मैं राजनीतिक बुराइयों पर एक ब्राह्मण के रूप में नजर रखने तक अपने को सीमित रखता हूँ। राजनीतिक मामलों में मैं 4 जून के पहले नरेंद्र मोदी का पक्षधर था अब मैं यह महसूस करता हूँ कि नरेंद्र मोदी भी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं कर पाएंगे इसलिए मैंने काफी सोच विचार कर यह मार्ग पकड़ा कि मुझे साम्यवाद, संगठन प्रधान इस्लाम और इन दोनों के पिछलग्गू नेहरू परिवार के विरोध तक अपने को सीमित रखना चाहिए। मेरा यह मानना है कि वर्तमान दुनिया भी ठीक दिशा में नहीं जा रही है और भारत भी ठीक दिशा में नहीं है। भारत का वर्तमान संविधान पूरी तरह से तंत्र का गुलाम हो गया है और इस भारतीय संविधान को तंत्र की गुलामी से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मैं मानता हूँ कि संविधान को मुक्त करने में जितनी बाधा कम्युनिस्ट इस्लाम और नेहरू परिवार से आएगी उतनी ही बाधा सत्तारूढ़ दल के तरफ से भी आएगी लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि सत्तारूढ़ दल को इस विषय में समझाया जा सकता है, नेहरू परिवार को नहीं। क्योंकि नेहरू परिवार भले ही प्रत्यक्ष रूप से घोषणा न करें लेकिन वह वर्तमान वित संविधान को यथावत रखना चाहता है उसमें किसी प्रकार के फेरबदल या संशोधन के पूरी तरह विरुद्ध है क्योंकि नेहरू परिवार का ऐसा मानना है कि बड़ी मुश्किल से 70 वर्षों में वास्तविक संविधान के स्वरूप को बिगाड़ कर स्थापित किया गया है और यदि संविधान में कोई संशोधन हो जाएगा तो नेहरू परिवार का खेल बिगड़ जाएगा। इसलिए नेहरू परिवार अपनी सारी ताकत इस विषय पर लगा रहा है कि किसी भी परिस्थिति में संविधान में कोई संशोधन संभव न हो सके। इसलिए मेरे सामने यह बात महत्वपूर्ण हो जाती है कि जब तक नेहरू परिवार, साम्यवाद और इस्लामी संगठन का गठजोड़ कमजोर नहीं हो जाता तब तक तंत्र की गुलामी से संविधान की मुक्ति की बात सोचना भी असंभव है और जब तक संविधान तंत्र की गुलामी से मुक्त नहीं हो जाता तब तक किसी भी समस्या के समाधान की शुरुआत हो ही नहीं सकती। मैं जानता हूँ कि कार्य कितना कठिन है लेकिन मैं पूरी ईमानदारी से इस कार्य में सक्रिय हूँ।

2. शांति और आतंक में फर्क:

हम प्रातःकालीन सत्र में हिंदू और मुसलमान की पहचान क्या है, इस विषय को आज के संदर्भ में देखकर चर्चा कर रहे हैं। हिंदू हमेशा शांतिप्रिय होता है और इस्लाम स्वाभाविक रूप से उग्रवादी होता है। हिंदुओं में यह धारणा आम प्रचलित है कि हम आतंकवाद और उग्रवाद को स्वीकार नहीं करेंगे। यदि कोई हिंदू भी आतंकवादी है तो हिंदू उसका समर्थन कभी नहीं करता। आपने देखा होगा कि आम हिंदुओं ने गांधी हत्या का समर्थन कभी नहीं किया, आम हिंदुओं ने नक्सलवादी हिंसा का भी समर्थन नहीं किया, आम हिंदुओं ने रावण के अत्याचारों का भी समर्थन नहीं किया, भले ही रावण ब्राह्मण था, भले ही गांधी का हत्यारा भी ब्राह्मण था। लेकिन हिंदू साफ तौर पर आतंकवाद के खिलाफ रहता है और यदि कहीं बल प्रयोग करना है तो उसकी स्वीकृति सिर्फ राज्य से जुड़े लोगों कि ही होती है अन्य लोगों को नहीं। दूसरी ओर इस्लाम आमतौर पर उग्रवादी होता है और आतंकवाद का समर्थन भी करता है। अभी आपने देखा होगा कि कल प्रसिद्ध आतंकवादी नसरुल्लाह मारा गया। कश्मीर के बड़े मुसलमान ने नसरुल्लाह के पक्ष में आवाज उठाई, अन्य स्थानों पर भी नसरुल्लाह के समर्थन में प्रदर्शन किए गए, जबकि आमतौर पर हिंदू और इसाई इस प्रकार के आतंकवाद का समर्थन नहीं करते बल्कि विरोध करते हैं। यही हिंदू और मुसलमान के बीच में साफ-साफ अंतर है। नसरुल्लाह के मारे जाने में भी नेहरू परिवार को छोड़कर ना अरविंद केजरीवाल कुछ बोलेंगे, ना अखिलेश यादव कुछ बोलेंगे क्योंकि इन दोनों की प्रवृत्ति मुस्लिम समर्थक भले ही हो लेकिन इस्लामी नहीं है। नेहरू परिवार की प्रवृत्ति शुद्ध आतंकवाद समर्थक है, इस्लाम समर्थक है, नक्सलवाद समर्थक है, यही हिंदू और मुसलमान के बीच में फर्क होता है, यही शांति और आतंक के बीच में फर्क होता है।

3. हिंदुत्व की सुरक्षा में लोकतांत्रिक देशों के समूह:

पूरी दुनिया में हिंदुत्व एक ऐसी विचारधारा है जो वैचारिक धरातल पर सारी दुनिया को संदेश देने की क्षमता रखती है दूसरी ओर हिंदुत्व एक ऐसी विचारधारा है तो जो संगठन शक्ति के मामले में दुनिया में सबसे कमजोर है। यह बात साफ है कि यदि हम संगठन की ताकत बढ़ाएंगे तो विचार शक्ति और गुणात्मक शक्ति हमारी कमजोर हो जाएगी, यह लाभदायक नहीं है। लेकिन सुरक्षा के लिए संगठन शक्ति की भी आवश्यकता है इसलिए वर्तमान दुनिया में हिंदुत्व यदि सुरक्षित होकर विचार शक्ति को बढ़ाने का कोई प्रयत्न करता है उसके लिए अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी किसी और को दे देनी चाहिए। वर्तमान दुनिया में हिंदुत्व की सुरक्षा की जिम्मेदारी

सबसे अधिक अमेरिका, ब्रिटेन, इजरायल आदि लोकतांत्रिक देश को दी जा सकती है। मेरा यह एक सुझाव है कि हिंदुत्व को जब तक कोई अन्य संगठन शक्ति मजबूत आधार पर ना दिखे तब तक अपनी सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी अमेरिका के नेतृत्व में लोकतांत्रिक देशों के समूह को दे देनी चाहिए। यदि हमें सुरक्षा की गारंटी हो जाएगी तो हिंदुत्व सारी दुनिया में वैचारिक धरातल पर अपना संदेश देने में सफल हो जाएगा। इसलिए हिंदुत्व को अब अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी अमेरिका के नेतृत्व में सौंप देनी चाहिए। वर्तमान समय में हम लोगों ने वैचारिक धरातल पर हिंदुत्व को आगे बढ़ाने की योजना बनाई है और हम लोगों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत, योगी आदित्यनाथ की जोड़ी को सौंप रखी है। मैं चाहता हूँ कि हम सबको इस योजना का समर्थन करना चाहिए। वर्तमान दुनिया में अमेरिका इजराइल का गुट ही हिंदुत्व की सुरक्षा करने की शक्ति रखता है।

4. गाय की रोटी कुत्ता खाए:

दोपहर के सत्र में हम संवैधानिक विषय पर चर्चा कर रहे हैं। हमारे देश के संविधान बनाने में भीमराव अंबेडकर की भी बड़ी भूमिका रही है और भारत का इतना रद्दी संविधान बना है इसका अधिक से अधिक श्रेय अंबेडकर जी को भी जाता है। भीमराव अंबेडकर पूरी तरह राजनीतिक स्वार्थ से ओत प्रोत थे। वह हिंदू एकजुटता के विरोधी थे और भारत में एक तीसरा देश बनाना चाहते थे लेकिन महात्मा गांधी की सूझबूझ से अंबेडकर अपने इस घृणित प्रयास में सफल नहीं हो सके फिर भी उन्होंने संविधान में ऐसे विषबीज शामिल कर ही दिए जो आज तक हमें दुःख दे रहे हैं। अंबेडकर के बाद भारत में कुछ अंबेडकरवादी खड़े हो गए। वैसे तो भारत को और हिंदुत्व को परेशान करने के लिए भारत में अनेक वादी खड़े हैं इनमें महिलावादी, पर्यावरणवादी, मानवाधिकारवादी, सावरकरवादी और पता नहीं कितने प्रकार के वादी हैं लेकिन इन सब में अंबेडकरवादी बहुत ज्यादा कष्ट दे रहे हैं। भारत में अंबेडकरवादियों की संख्या कुल आबादी में 1000 में एक ही है लेकिन यदि हम आदिवासी और हरिजन में आकलन करें तब भी आदिवासी हरिजन की कुल आबादी में अंबेडकरवादियों की संख्या 100 में एक से अधिक नहीं है लेकिन यह इतनी कम संख्या में होते हुए भी सारे देश की राजनीतिक शक्ति अपने हाथ में रखना चाहते हैं। यह अंबेडकर द्वारा संविधान में डाले गए कुछ प्रावधानों का दुरुपयोग करके लगातार हमारे राजनीतिक व्यवस्था को ब्लैकमेल करते रहते हैं। यह सारे श्रम शोषण के तरीके खोजते रहते हैं। वैसे तो अंबेडकर भी श्रमजीवियों के बिलकुल खिलाफ थे और उन्होंने जीवन भर बुद्धिजीवियों

का पक्ष लिया लेकिन अंबेडकरवादी तो अब बहुत ही ज्यादा परेशान कर रहे हैं। भारत की कुल आदिवासी और दलित जनसंख्या को मिलाकर श्रमजीवियों की संख्या 90 से 95% से भी अधिक है लेकिन श्रमजीवियों की सारी सुविधाएं यह एक प्रतिशत अंबेडकरवादी लूट लेना चाहते हैं। यह चाहे जगजीवन राम बन जाए या रामविलास पासवान, मायावती या चंद्र शेखर बन जाए लेकिन आरक्षण का कोई लाभ इन 99% लोगों को नहीं मिलने देना चाहते। यह सारा लाभ पीढियों तक अपने खानदान तक सीमित रखना चाहते हैं। यहां तक यह बेशर्म हो गए हैं कि न्यायालय के वर्तमान सुझावों का भी खुलकर विरोध करने की हिम्मत दिखा रहे हैं क्योंकि इन्हें अंबेडकर ने संविधान में कुछ शस्त्र दे दिए हैं और यह अंबेडकरवादी लगातार उन शस्त्रों का दुरुपयोग कर रहे हैं। अब समय आ गया है कि भारत के आदिवासी और दलित इन श्रम शोषक अंबेडकरवादियों की पहचान करें, इनका सामाजिक बहिष्कार करें और आगे का मार्ग प्रशस्त करें। श्रम के साथ न्याय होना ही चाहिए। गाय की रोटी कुत्ता खाता रहे और कुत्ता पशु होने के नाम पर गायों को ब्लैकमेल करता रहे, यह उचित नहीं है।

5. पक्ष-विपक्ष की विपरीत धारणाएं:

हम आज की सायंकालीन चर्चा में राजनीतिक चर्चा कर रहे हैं। भारत में आर्थिक विषयों पर दो तरह की धारणाएं काम कर रही हैं। एक धारणा है विपक्षी दलों की और एक दूसरी धारणा है सत्तारूढ़ दल की, इन दोनों के अंतर को हम अंडा और मुर्गी के उदाहरण से प्रस्तुत कर सकते हैं। एक धारणा इस तरह की है कि हमें भूख बहुत लगी है और हम मुर्गी को खा जाएं, बाद में जो होगा देखा जाएगा। यह धारणा विपक्षी दलों की है दूसरी धारण ऐसी है जिसका यह मानना है कि यदि मुर्गी को खा लेंगे तो भविष्य में अंडे मिलने बंद हो जाएंगे और हमें प्रतिदिन भूखे रहना पड़ेगा इसलिए हम थोड़ी-सी भूख बर्दाश्त करके भी मुर्गी को जिंदा रखेंगे जिससे हमें रोज अंडे मिलते रहे। इन दोनों धारणाओं के बीच लगातार बहस चल रही है विपक्ष मुर्गी को खाना चाहता है और आम लोगों को यह संदेश देना चाहता है कि भूख मिटाने का सबसे अच्छा तरीका यही है। विपक्ष चाहता है कि जो बड़े-बड़े उद्योगपति हैं जो सरकार को भारी टैक्स देते हैं, उन उद्योगपतियों का उद्योग भले ही बंद हो जाए। सरकार उद्योगपतियों का टैक्स लेकर आम लोगों को बांट दे जिससे लोगों के तात्कालिक ज़रूरतें पूरी हो जाए भले ही वह उद्योग सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाए। दूसरी ओर सरकार का यह मानना है कि हमारे उद्योग धंधे बढ़ते रहे, इन उद्योग धंधों से जो टैक्स सरकार को मिलेगा, उस टैक्स के माध्यम से हम पूरे समाज को धीरे-धीरे मदद करते रहेंगे। उन उद्योगों को बर्बाद नहीं होना चाहिए। मैं सरकार की अर्थनीति के पक्ष में हूँ। मैंने बार-बार लिखा है कि अडानी और अंबानी जितना भारत में टैक्स देते हैं उतना शायद लाखों उपभोक्ता मिलकर नहीं देते होंगे,

फिर भी विपक्ष अडानी और अंबानी को बर्बाद करना चाहता है और सत्ता पक्ष अडानी और अंबानी को मजबूत करना चाहता है। मेरे विचार से अडानी अंबानी जो कर रहे हैं वह देशभक्ति का कार्य है, वह सामाजिक कार्य है, उन्हें अपने उद्योग बढ़ाने चाहिए। सरकार को चाहिए कि अडानी अंबानी को वह सम्मानित करें, उनको प्रोत्साहित करें जिससे कि आम गरीब लोगों को मदद करने में उनकी सहायता हो सके। मैं अडानी अंबानी को और अधिक प्रोत्साहन देने का पक्षधर हूँ, जिससे वह सारी दुनिया में अपने उद्योगों का विस्तार कर सकें।

6. **महिला समाज को ब्लैकमेल करती मुट्ठी भर महिलाएं**:

हम हमारी सामाजिक व्यवस्था में ब्लैकमेल करने वालों की बढ़ती संख्या पर चर्चा कर रहे हैं। कल हमने आदिवासी और दलितों के नाम पर कुछ मुट्ठी भर लोगों द्वारा पूरे आदिवासी दलित समुदाय को ब्लैकमेल करने का विषय चुना था। आज हम चर्चा करेंगे किस तरह हमारे देश की मुट्ठी भर महिलाएं पूरे महिला समाज को ब्लैकमेल कर रही है। हमारे समाज में महिलाओं की संख्या 49% है, इस 49% में भी सिर्फ एक प्रतिशत ही महिलाएं आधुनिक वातावरण में है शेष 99% पारिवारिक वातावरण का जीवन जीती है। इन एक प्रतिशत महिलाओं ने पूरे महिला समाज को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया है। इन्हें विशेष अधिकार भी चाहिए, समान अधिकार भी चाहिए। इन्हें राजनीति में भी दखल देने की जरूरत है, इन्हें हर जगह सुरक्षा भी चाहिए और हस्तक्षेप भी चाहिए। स्वाभाविक है कि दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकती। इन आधुनिक महिलाओं ने इस तरह पूरे राजनीतिक वातावरण को ब्लैकमेल किया है कि यह जो चाहती हैं वही कानून बनवाती है इनमें से अनेक महिलाएं अपने विकास के लिए अपना चरित्र बेचती हैं और उसके बाद जब चाहे तब ब्लैकमेल का सहारा भी लेती है। वर्तमान भारत में महिलाओं के संबंध में जितने भी कानून बने हैं इन एक प्रतिशत ब्लैकमेलर महिलाओं ने ही बनवाए हैं। इन्होंने ही परिवार व्यवस्था को कमजोर किया है अन्यथा महिला आरक्षण की समाज में कोई जरूरत नहीं थी। इन एक प्रतिशत महिलाओं को यदि यह ऑफर दिया जाए कि परिवार के एक सदस्य को आरक्षण दिया जाएगा तो यह एक प्रतिशत आधुनिक महिलाएं सारा आसमान सर पर उठा लेंगे क्योंकि इन्हें तो ब्लैकमेलिंग का अधिकार चाहिए। अब समय आ गया है कि आदिवासियों और दलितों के संबंध में न्यायालय ने जो आदेश दिए हैं वही आदेश महिलाओं के संबंध में भी दिए जाएं अर्थात उन्हीं महिलाओं को आरक्षण दिया जाएगा जो किसी योग्यता में और संपत्ति में किसी सीमा से नीचे होगी। यह महिला सशक्तिकरण का नारा लगाने वाली एक प्रतिशत महिलाएं पूरी तरह अपंग हो जाएगी और 99% महिलाओं के विकास का मार्ग खुल जाएगा।

7. तंत्र के अधिकारों की अंतिम सीमाएं तय हों:

दोपहर की चर्चा में हम संवैधानिक विषयों पर चर्चा कर रहे हैं। यह भारत का कैसा संविधान है जिसने न्यायपालिका और विधायिका के अधिकारों की अंतिम सीमाएं ही तय नहीं की है और यदि ऐसी सीमाएं घोषित है तो इनके उल्लंघन को रोकने का कोई प्रावधान नहीं है। सन 51 से लेकर 73 तक हमारी विधायिका ने न्यायिक मामलों में लगातार हस्तक्षेप किया। विधायिका संविधान की सर्वोच्च संरक्षक बन गई। विधायिका ही प्राकृतिक और सामाजिक न्याय को भी परिभाषित करती रही और संवैधानिक न्याय को भी। सन 73 के बाद न्यायपालिका ने असंवैधानिक तरीके से विधायिका पर अंकुश लगाया और आज न्यायपालिका विधायिका और कार्यपालिका के हर मामले में हस्तक्षेप कर रही है। यहां तक कि न्याय क्या है यह सिर्फ विधायिका ही परिभाषित कर सकती है सिर्फ मौलिक अधिकारों की परिभाषा के मामले में ही न्यायालय को हस्तक्षेप करना चाहिए, सामाजिक न्याय के मामले में नहीं। लेकिन न्यायपालिका अपने को सर्वोच्च घोषित कर रही है। वर्तमान समय में जिस तरह न्यायिक सर्वोच्चता का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है यह हमारे संवैधानिक व्यवस्था की एक बड़ी असफलता है। इस सारी असफलता का दोष भारतीय संविधान को जाता है जिसमें यह स्पष्ट ही नहीं किया कि यदि न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका के बीच किसी संवैधानिक मामले में टकराव होगा तो इस टकराव का निर्णय कौन करेगा। इसलिए अब समय आ गया है कि हमारे संविधान की अधिक स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की जाए।

8. जरूरी क्या, हिंदुत्व की सुरक्षा या विस्तार? :

कल मंगलवार की रात हम लोगों ने जूम पर बैठकर इस विषय पर गंभीर मंथन किया कि अब हम लोगों को हिंदुत्व की सुरक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए या विस्तार को। इस विषय पर दोनों प्रकार के अलग-अलग मत आए। कुछ लोगों का यह विचार था कि हमें सुरक्षा को अधिक महत्वपूर्ण मानना चाहिए कुछ लोगों का यह विचार था कि हमें हिंदुत्व की सुरक्षा को महत्वपूर्ण न मानकर विस्तार को महत्वपूर्ण मानना चाहिए। जो लोग विस्तार को महत्वपूर्ण मान रहे थे उनका यह तर्क था कि नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ, मोहन भागवत के सत्ता में रहते हुए हिंदुत्व की सुरक्षा पर अब कोई खतरा नहीं है और हमें दुनिया में विचारधारा के आधार पर हिंदुत्व को विस्तार देना चाहिए। दूसरी ओर कुछ लोगों का यह मानना था कि हिंदुत्व को इस्लाम से अभी भी बहुत खतरा है जिस तरह इस्लाम संख्या विस्तार कर रहा है तथा विपक्ष लगातार इस्लाम को प्रोत्साहित कर रहा है उस स्थिति में हिंदुत्व की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इन दोनों मुद्दों पर अलग-अलग गंभीर चिंतन हुआ। और जैसा कि आप जानते हैं कि हम लोग की चर्चा कार्यक्रम में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जाता है तो हम लोगों ने सामूहिक रूप से कोई निष्कर्ष भी नहीं निकाला लेकिन दोनों विषयों पर अपने-अपने अच्छे तर्क प्रस्तुत किए गए।

9. बंदर के हाथ बटेर लगने वाली स्थिति :

भारतीय जनता पार्टी सरकार ने हरियाणा से परिवार को मान्यता देने की शुरुआत की है। हम बहुत लंबे समय से यह मांग करते रहे हैं कि परिवारों को संवैधानिक मान्यता दी जाए। हरियाणा सरकार ने इसकी शुरुआत करके बहुत ही अच्छा कार्य किया है। लेकिन राहुल गांधी ने आज यह घोषणा की है कि यदि हमारी सरकार बनेगी तो हम परिवारों का पहचान पत्र समाप्त कर देंगे। मैं लंबे समय से लिख रहा हूं कि राहुल एक नासमझ है। वैसे ही राहुल गांधी के हाथ में जैसे कि बंदर के हाथ बटेर लग गई है। राहुल गांधी वही सब कुछ कर रहा है जो कम्युनिस्ट लोग उसे कह रहे हैं। राहुल अकेला नहीं है राहुल की माता जी पर कम्युनिस्टों का बहुत प्रभाव रहा है। यहां तक कि मनमोहन सिंह को भी नियंत्रित करने के लिए 16 कम्युनिस्टों को मनमोहन सिंह के सिर के ऊपर बिठा दिया गया था। इस तरह मैं यह कह सकता हूं कि नेहरू परिवार हमारे देश की परिवार व्यवस्था के लिए उतना खतरा नहीं है जितना साम्यवाद है और नेहरू परिवार का साम्यवादियों से इतना पारिवारिक संबंध हो गया है जितना पति-पत्नी के बीच आपस में होता है। मेरे विचार से राहुल गांधी की इस खतरनाक योजना का देश को उत्तर देना चाहिए। राहुल गांधी हमारी भारतीय समाज व्यवस्था को समाप्त करना चाहते हैं और हमारे समाज व्यवस्था में परिवार व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण योगदान है। मैं फिर से स्पष्ट कर दूं कि हम पूरी ताकत से परिवार व्यवस्था को बचाने या बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं और राहुल गांधी सरीखे लोग हमारी परिवार व्यवस्था को उतनी ही ताकत से समाप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

10. झूठ बोलने का सबसे बड़ा राजनीतिक रिकॉर्ड :

भारतीय राजनीति में अगर झूठ बोलने का वर्तमान समय में सबसे ज्यादा रिकॉर्ड रखते हैं, तो वह है राहुल गांधी। आज कांग्रेस पार्टी ने हरियाणा चुनाव पर अपनी प्रतिक्रिया दी। कांग्रेस पार्टी ने कहा कि हरियाणा में लोकतंत्र हार गया। कांग्रेस पार्टी ने कहा कि चुनाव आयोग बिक गया है एवं पूरी तरह से गलत है। आज शाम कांग्रेस के नेता चुनाव आयोग से भी मिलने वाले हैं। मैं लगातार 15-20 वर्षों से लिखता रहा हूँ कि राहुल गांधी झूठ बोलने वाली मशीन बन गए हैं क्योंकि मशीन खुद से कुछ नहीं करती। जो मशीन को चलाता है इस तरह चलती है। राहुल गांधी जो भी झूठ बोलते हैं, वह सब झूठ तैयार करने का काम एक अलग इकाई करती है। उसमें मुख्य रूप से कम्युनिस्ट शामिल होते हैं और कोई नहीं है। कम्युनिस्टों ने राहुल गांधी पर पूरी तरह नियंत्रण कर लिया है, गुलाम बना लिया है। राहुल गांधी एक मशीन की तरह उनके झूठ दिन-रात दोहराते रहते हैं। यह आश्चर्य है कि कल के चुनाव में लोकतंत्र पर सवाल खड़ा कर दिया गया। राहुल गांधी का यदि आप पूरा इतिहास देखेंगे तो पिछले 10-12 वर्षों में राहुल गांधी ने झूठ के अलावा कुछ बोला ही नहीं है। कोई एक भी दिन आप ऐसा निकाल कर नहीं बता सकते हैं कि आज राहुल गांधी ने सच बोला था चाहे वह जनेऊ पहन कर के निकलना हो चाहे गोत्र बताना हो या राजनीति की बात करनी हो राहुल गांधी दिन रात सपने में भी झूठ बोलते हैं। अब धीरे-धीरे भारत की जनता को यह विश्वास होता जा रहा है कि राहुल गांधी सिर्फ कम्युनिस्टों के इशारे पर झूठ बोलते हैं और राहुल गांधी पूरी तरह से साम्यवादियों के गुलाम हो गए हैं। अगर भारत में लोकतंत्र को बचाना है तो इस तरह की गुलामी से हमें मुक्ति प्राप्त करनी होगी। लोकतंत्र की पहली लड़ाई हमारी यही है कि राहुल गांधी को राजनीति से पूरी तरह बाहर कर दिया जाए। हमें झूठ बोलने वाली मशीन नहीं, बल्कि बोलने वाला व्यक्ति चाहिए।

11. राजनीति मुक्त समाज सारी दुनिया के लिए एकमात्र विकल्प:

हमारी समाज व्यवस्था को सबसे अधिक खतरा राजनीतिक व्यवस्था से है। राजनीतिक व्यवस्था समाज व्यवस्था को गुलाम बनाकर रखना चाहती है। कल ही समाचार मिला कि हमारी सरकार इस बात से बहुत चिंतित है कि उत्तर प्रदेश के नौ जिलों में जन्म दर घट गई है, इससे बूढ़ों की आबादी बढ़ रही है और इस विषय पर गंभीरता से सोचा जाना चाहिए। अरे धूर्तो! देश में आतंकवाद बढ़ रहा है, नक्सलवाद बढ़ रहा है मिलावट बढ़ रही है और तुम बूढ़े और जवानों की आबादी की चिंता कर रहे हो। तुम अभी तक इस बात से चिंतित थे कि आबादी बढ़ रही है और अब इस बात से चिंता शुरू कर रहे हो कि आबादी घट रही है। अरे भाई, राजनीतिक उद्देश्यों के लिए समाज को इस तरह हमेशा उलझाना उचित नहीं है। तुम लोग दो गुटों में बंटकर दिन-रात ऐसा नाटक करते हो कि हम लोग नाटक देखने में व्यस्त हो जाते हैं। अब समाज इस बात को समझना शुरू कर रहा है कि हमारे देश के राजनीतिक नेता नाटकबाज है, सारे समाज को लूट लेना चाहते हैं, गुलाम बना कर रखना चाहते हैं। पिछले 70 वर्षों से यह आबादी घटने की बात कर रहे थे और अब धीरे-धीरे आबादी बढ़ने की शुरुआत कर रहे हैं। इन राजनेताओं ने मिलकर मीडिया कर्मियों को खरीद लिया है, तथाकथित विचार को खरीद लिया है, इन राजनेताओं में मिलकर ऐसी दुकानदारी की है कि हम लोग उस दुकानदारी में मोहित हो जाते हैं इसलिए अब हम आप सब मिलकर इस बात पर चर्चा करें कि हमारे समाज को राजनीति मुक्त समाज चाहिए, राजनीति रहित तो नहीं चाहिए लेकिन राजनीति मुक्त अवश्य चाहिए। हम राजनेताओं को अपना मैनेजर मान सकते हैं, सुरक्षाकर्मी मान सकते हैं लेकिन हम उन्हें भाग्य विधाता नहीं मान सकते।

हम लोगों ने 70 वर्षों तक रिसर्च करके कुछ निष्कर्ष निकाले हैं और उन निष्कर्षों को धीरे-धीरे आगे बढ़ा रहे हैं। वास्तव में यह निष्कर्ष सिर्फ व्यवस्था परिवर्तन नहीं है बल्कि यह युग परिवर्तन है। यह निष्कर्ष सारी दुनिया के लिए बदलाव का आधार बनेंगे लेकिन इन बदलाव की पहल भारतवर्ष से ही होनी चाहिए। हमारा यह मानना है कि जब तक राजनीति मुक्त समाज नहीं खड़ा होगा तब तक कोई बदलाव नहीं आ सकेगा और इस बदलाव की शुरुआत स्वतंत्र परिवार व्यवस्था से ही संभव है। समाज व्यवस्था राजनीतिक व्यवस्था के समानांतर अलग से चलनी चाहिए और समाज व्यवस्था की शुरुआत एक स्वतंत्र परिवार से होनी चाहिए। इसके लिए हमें पूरे भारत में जन जागरण करना है। हमारे इस कार्य में दो संस्थाएं सबसे बड़ी बाधक है पहली संस्थाएं तो वह है जो समाज व्यवस्था को लगातार गलत बताकर कमजोर कर रहे हैं। हमारे राजनेता और धर्मगुरु लगातार समाज की गलतियां निकालते रहते हैं, इससे हमारा मनोबल टूटता है। दूसरी बड़ी बधाई यह है कि जो हमें धर्म, जाति, लिंग आदि वर्गों में बांटकर समाज के टुकड़े-टुकड़े करके रखना चाहते हैं तथा वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था को ही सभी समस्याओं का समाधान बताते हैं। हमें इन दोनों मोर्चो पर एक साथ निपटना पड़ेगा। हम इस असंभव कार्य को करने की शुरुआत कर चुके हैं हमें अच्छी सफलता मिल रही है। प्रतिदिन चर्चा में 15 से 20 लोग जुड़ जाते हैं और इनकी संख्या भी बढ़ रही है। मैं जानता हूं कि मार्ग असंभव तक कठिन है किंतु इस मार्ग के अतिरिक्त और कोई मार्ग दिखता भी नहीं है इसलिए हम लोगों की पूरी टीम धीरे-धीरे इस दिशा में निरंतर सक्रिय है। जो भी लोग वर्ग निर्माण, वर्ग संघर्ष की बात करते हैं अथवा सामाजिक बुराइयों की बढ़-चढ़कर बात करते हैं और समाज को गलत बताते हैं, उन सब लोगों से हम दूरी बनाकर रख रहे हैं। सारी दुनिया एक विकल्प खोज रही है, हम सबका कर्तव्य है कि हम सारी दुनिया को एक विकल्प दे सकें।

12. ब्राह्मण अर्थात मार्गदर्शक की वर्तमान सामाजिक भूमिका:

प्रातःकालीन सत्र में अपनों से अपनी बात के अंतर्गत मैं कुछ स्पष्ट कर रहा हूँ। मैं ब्राह्मण अर्थात मार्गदर्शक हूँ। ब्राह्मण की सर्वोच्च उपलब्धि यह मानी जाती है कि समाज में तर्क जीवित रहे। वर्तमान भारत और विशेष कर हिंदुओं में तर्क शक्ति का निरंतर कमजोर होना यह सिद्ध करता है कि समाज में ब्राह्मणों की संख्या लगातार घट रही है। आज की चर्चा में मैं उसके कारण और समाधान की चर्चा नहीं कर रहा, मैं तो अपनी ब्राह्मण होने के नाते सफलता असफलता का आकलन प्रस्तुत कर रहा हूँ। भारत का संविधान लिखने में तार्किक ब्राह्मणों की संख्या शून्य रही, जब से हम सब ने तर्कशक्ति से दूरी बनाई उसी के परिणाम स्वरूप पुराने जमाने में हम गुलाम भी हुए और वर्तमान समय में कम्युनिस्टों ने तर्कशक्ति को बढ़ाकर हमारा दुरुपयोग किया। यह स्पष्ट है कि वर्तमान भारत में तर्कशक्ति के मामले में सिर्फ कम्युनिस्ट ही सबसे आगे है। आज हमारी युवा पीढ़ी कम्युनिस्टों से अधिक प्रभावित हो रही है जो हमारे लिए बहुत घातक है। हम अपने युवा पीढ़ी को राम बनाना चाहते हैं किंतु हम विश्वामित्र बनना ही नहीं चाहते। कृष्ण की तर्क शक्ति ने अर्जुन को प्रेरित किया था ना कि कृष्ण ने स्वयं अर्जुन बनाने का प्रयत्न किया। मुझे यह जानकर दुःख होता है कि हमारे हिंदुओं के अच्छे-अच्छे विद्वान भी समाज में हिंसा की वकालत करते हैं जिसके परिणाम स्वरुप पूरे सामाजिक वातावरण में हिंसा तो तेजी से बढ़ रही है किंतु तर्कशक्ति घट रही है। ब्राह्मणत्व घट रहा है, पश्चिम का सारा असत्य भारत में सत्य के समान स्थापित हो रहा है, इस्लाम की सारी हिंसा भी भारत के हर हिंदू के संस्कार में प्रवेश कर रही है और मेरे जैसा ब्राह्मण ऐसे वातावरण में कुछ भी नहीं कर पा रहा। फिर भी इस अधिक उम्र में मैं लगातार प्रयत्न कर रहा हूँ कि समाज में तर्क के माध्यम से साम्यवाद को चुनौती दे सकूं। मेरा यह लगातार प्रयास है कि समाज से जाने के पूर्व मुझे कुछ ब्राह्मण तैयार करना है। मैं ऐसे ब्राह्मण तैयार कर सकूं उन लोगों की पहचान कर सकूं कि जो दुनिया के इस अभाव के समाधान में सहायक हो सके। जिन्हें तर्क शक्ति पर विश्वास न होकर हिंसा पर विश्वास है यह वर्ण व्यवस्था में क्षत्रिय तो कहे जा सकते हैं, किंतु ब्राह्मण नहीं। समाज सिर्फ क्षत्रियों से नहीं चल सकता, समाज में चारों वर्णों का संतुलन होना चाहिए यदि हमने समाज में नए ब्राह्मण तैयार नहीं किया तो हम न तो नास्तिकता का मुकाबला कर पाएंगे न इस्लामी हिंसा का। 'बुद्धिर्यस्य बलम तस्य' हमारा आदर्श वाक्य होना चाहिए।

13. संस्थागत वर्तमान गतिविधियां:

प्रातःकालीन सत्र में अपनों से अपनी बात के अंतर्गत हम लोगों की संस्था की जानकारी दे रहा हूं। हम लोग की संस्था मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान है, इसका प्रमुख कार्यालय रायपुर में है। हमारे संस्थान ने 75 वर्षों तक रिसर्च किया और रिसर्च के बाद 4 वर्ष पहले यह अंतिम निष्कर्ष निकाला कि दुनिया की सभी समस्याओं का मुख्य कारण है- समाज का कमजोर होना और राज्य व्यवस्था का मजबूत होना। इस निष्कर्ष के समाधान के रूप में हम लोगों ने दो अलग-अलग मार्ग

चुने - एक समाधान है लोक स्वराज और दूसरा है समाज सशक्तिकरण। इन दो मुद्दों पर अलग-अलग जन जागरण करने के लिए हम लोगों ने दो अलग-अलग संस्थाएं बनाई समाज सशक्तिकरण के लिए ज्ञान यज्ञ परिवार और लोक स्वराज्य के लिए व्यवस्था परिवर्तन अभियान। इन दोनों के कार्यालय भी अलग-अलग हैं। ज्ञानयज्ञ परिवार का कार्यालय रामानुजगंज है, इसके प्रमुख मोहन गुप्ता जी, ज्ञानेंद्र आर्य जी, प्रमोद केसरी जी वगैरह है। लोक स्वराज्य कार्यालय दिल्ली में है, इसके प्रमुख नरेंद्र सिंह जी है। हमारा यह मानना है कि दुनिया की सभी समस्याओं के समाधान के लिए यह दो मार्ग ही उपयुक्त है और हम लगातार दोनों दिशाओं में सक्रिय हैं। हम कोई आंदोलन नहीं करते, हम वर्तमान में सिर्फ जन जागरण तक सीमित है। ज्ञान यज्ञ परिवार प्रतिदिन रात को 8:00 बजे से एक से डेढ़ घंटे तक किसी एक विषय पर स्वतंत्र विचार मंथन आयोजित करता है जो रविवार को छोड़कर प्रतिदिन होता है। लोक स्वराज अभियान गांधी के विचारों पर आधारित फिल्म प्रयोग को अधिक से अधिक प्रमोट कर रहा है। हम चाहते हैं कि प्रयोग फिल्म सारी दुनिया के लिए मार्गदर्शन कर सके। मैं दोनों संस्थाओं से अलग रहकर प्रतिदिन कुछ ना कुछ लिखता हूँ। मैं विचार मंथन तक अपने को सीमित रखता हूँ, सन्यास आश्रम के कारण मैं किसी अभियान में सक्रिय नहीं हूँ। आप सब लोग हमारे इस कार्यक्रम से जुड़ने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

14. रामानुजगंज शहर एक स्वराज नगर है:

रामानुजगंज शहर को स्वराज नगर कहा जाता है इसके अनेक कारण है लेकिन मैं आपको एक विशेषता बता दूं कि रामानुजगंज में चोरी-डकैती प्रायः नहीं होती है, किसी तरह की दादागिरी नहीं है। इस शहर में अभी जो डकैती हुई और पकड़ी गई, इसकी भी एक विशेषता है। दिनदहाड़े 1:00 बजे इतना बड़ा अपराध हुआ। शहर और आसपास का पूरा इलाका हिल गया। सब लोगों ने मिलकर वहां की पुलिस को भरोसा दिया कि हम आपकी मदद करेंगे। यह रामानुजगंज की खासियत रही कि वहां पूरे 21 दिनों तक रामानुजगंज नगर के लोगों ने ना कोई आंदोलन किया ना कोई जुलूस निकाला, न सरकार से कोई मांग की क्योंकि रामानुजगंज शहर का पिछले 50-60 वर्षों से यह इतिहास रहा है कि वहां कोई मांग नहीं करते, कोई आंदोलन नहीं करते, कोई हड़ताल और चक्का जाम नहीं करते। वहां आम लोगों के मन में पुलिस के प्रति बहुत भरोसा और विश्वास है। जहां आमतौर पर दूसरी जगह पुलिस के खिलाफ नारे लगाते हैं वही रामानुजगंज शहर में हमेशा पुलिस और नागरिक मिलकर अपराध नियंत्रण करते हैं। इसीलिए रामानुजगंज में आज से करीब 10 साल पहले जब स्वराज नगर घोषित किया गया था तब हरियाणा के आईजी वगैरह भी उस कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। रामानुजगंज ही वह शहर है जहां भारतीय संविधान पर 15 वर्षों तक लगातार रिसर्च हुआ और नई सामाजिक व्यवस्था की रूपरेखा तैयार की गई इसीलिए रामानुजगंज शहर को स्वराज नगर कहा जाता है।

15. विचार प्रधान वर्ण व्यवस्था या शक्ति प्रधान वर्ण व्यवस्था:

हम प्रातःकालीन सत्र में इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि हम धर्म के पक्षधर हैं अथवा हिंदू धर्म के। मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि धर्म को दुनिया में मजबूत करने का सबसे अच्छा मार्ग नरम हिंदुत्व है। दुनिया में दो प्रकार के धर्म के बीच संघर्ष चल रहा है एक है क्षत्रिय प्रधान और दूसरा है ब्राह्मण प्रधान। ब्राह्मण प्रधान धर्म का मतलब यह है कि विचारवान लोग बलवान लोगों का मार्गदर्शन करेंगे और बलवान लोग विचार प्रधान लोगों की बात मानेंगे। दूसरी तरफ एक धर्म है जो शक्ति से ही सभी समस्याओं का समाधान करना चाहता है वह विचारवान लोगों को ना कोई सम्मान देना चाहता है, ना उनको सुविधा देना चाहता है, ना उनको स्वतंत्रता देना चाहता है। इस प्रकार के बल प्रधान धर्म का नेतृत्व इस्लाम के पास है और भारत के हिंदुओं का भी एक समूह इस मार्ग की दिशा में लगातार बढ़ रहा है जिसे हम सावरकरवादी समूह कहते हैं यह एक खतरनाक स्थिति है यद्यपि इसे मजबूरी बताया जा रहा है। दूसरी ओर विचार प्रधान धर्म भी भारत से ही शुरू हो सकता है और ईसाइयों का इसे अच्छा समर्थन मिल सकता है, इस तरह दुनिया में विचार प्रधान वर्ण व्यवस्था और शक्ति प्रधान वर्ण व्यवस्था के बीच जो टकराव चल रहा है, उस टकराव में शक्ति प्रधान व्यवस्था अभी भारी पड़ रही है। लेकिन सच्चाई यह है कि विचार प्रधान वर्ण व्यवस्था को ही आगे होना चाहिए। हम विचार प्रधान वर्ण व्यवस्था वाले लोग भले ही वर्तमान समय में कमजोर पड़ रहे हैं लेकिन हम समाप्त नहीं होंगे। हम फिर से मजबूत होंगे हम लगातार इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं कि वर्ण व्यवस्था धीरे-धीरे दुनिया में मजबूत हो और वर्ण व्यवस्था में भी विचार प्रधान धर्म सबसे ऊपर हो शक्ति प्रधान धर्म नहीं। मेरा आपसे निवेदन है कि हम विचार प्रधान वर्ण व्यवस्था को बचाने में सहयोग करने की कृपा करें।

16. सभी समस्याओं की जड़ में पश्चिमी अंधानुकरण:

हम दोपहर के सत्र में संविधान पर चर्चा कर रहे हैं। भारत ने आंख बंद करके पश्चिम के संविधानों की नकल की। पश्चिम के संविधान में हथियार रखना साधारण अपराध माना जाता है और गाँजा, हीरोइन, शराब रखना गंभीर अपराध माना जाता है। भारत में भी इसी की नकल की लेकिन इस नकल के दुष्परिणाम बहुत गंभीर हुए। कल ही पता चला है कि भारत का कांग्रेस पार्टी का एक बहुत बड़ा नेता कई हजार करोड़ के हीरोइन एलसीडी आदि के साथ पकड़ा गया। मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि वह किस पार्टी का नेता था मुख्य प्रश्न यह है कि इस प्रकार करोड़ों का बिजनेस हम रोक नहीं पा रहे हैं और इसे रोका भी नहीं जा सकता है। कौन नहीं जानता है कि अफगानिस्तान या अन्य कई देश इसी प्रकार के अवैध कार्यों से जिंदा है। अनेक आतंकवादी संगठन इसी प्रकार अफीम, गांजा या हीरोइन का उत्पादन और व्यापार करके अपने को जीवित रख रहे हैं। इस समस्या का वह समाधान नहीं हो सकता जो समाधान हमारा पश्चिमी जगत बता रहा है और जो समाधान हम भारत में करना चाहते हैं। गांधी ने शराब रोकने की भरपूर कोशिश की, भारत में कई सरकारों ने भी शराब को रोकना चाहा, लेकिन शराब नहीं रुकी क्योंकि अपराधी तत्व शराब, गांजा, अफीम कई आधार लेकर अपने

को जिंदा रखते जा रहे हैं। यदि हम शराब रोकना गांजा रोकना अफीम और हीरोइन रोकना इन सब पर ताकत लगाना बंद कर दें तो यह अपराधी तत्व का सारा रोजगार ही खत्म हो जाएगा। आतंकवाद को यदि आप समाप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे अच्छा होगा कि आप नशे पर नियंत्रण लगाना बंद कर दीजिए, नशा बहुत बुरी चीज है जिसे रोकना समाज का काम है, परिवार का काम है, राज्य का काम नहीं है। राज्य का काम है आतंक रोकना, राज्य का काम है मिलावट रोकना। दुर्भाग्य से हमारा संविधान पश्चिम की नकल करने के कारण गांजा और अफीम तो रोक रहा है और अपराध नहीं रोक पा रहा है। समय आ गया है कि हम अपनी शक्ति अपराधों को रोकने पर लगावे और यह गांजा, अफीम, शराब, तंबाकू इन सबको रोकने का काम समाज पर छोड़ दें। हमारे जो भी धर्मगुरु या सामाजिक कार्यकर्ता शराब गांजा तंबाकू अफीम रोकने की सरकार से मांग करते हैं वे सब निकम्मे हैं। खुद तो कुछ करना नहीं चाहते हैं और सरकार से मांग करके अपने को धर्मगुरु सिद्ध करना चाहते हैं, इन निकम्मे लोगों से हमें पिंड छुड़ाना पड़ेगा।

17. गांधी विचार आज भी प्रासंगिक:

सायंकालीन सत्र में हम इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि गांधी के विचार ही भारत के लिए वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रासंगिक हैं। एक मूर्ख ने गांधी के शरीर की हत्या कर दी थी और उस मूर्ख के इस गलती के आधार पर धूर्तों ने एकजुट होकर गांधी के विचारों की हत्या कर दी। अब पूरा भारत महसूस कर रहा है कि हमारी समस्याओं के समाधान के लिए गांधी के विचार ही उचित है इसलिए गांधी के विचारों पर आधारित फिल्म प्रयोग का 2 अक्टूबर को दिल्ली में राजघाट पर एक समारोह के अंतर्गत प्रारंभिक प्रदर्शन हुआ। यह फिल्म मुंबई के गोविंद मिश्रा जी ने बनाई है और उसमें मुख्य भूमिका छत्तीसगढ़ के कलाकारों की है। उस फिल्म के प्रदर्शन के लिए छत्तीसगढ़ के कुछ लोग दिल्ली गए और उन्होंने सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया। वे रास्ते में अनेक गांधी विचारकों और संस्थाओं के माध्यम से इस फिल्म का प्रदर्शन करते हुए दिल्ली से लौटकर कल अंबिकापुर पहुंचेंगे। इस फिल्म के माध्यम से विश्व गांधी के विचारों को आसानी से समझ सकेगा। फिल्म बनाने वाले सभी कलाकारों को मेरी बहुत-बहुत बधाई। दुनिया के हर व्यक्ति को एक अच्छे मार्गदर्शन के लिए यह फिल्म अवश्य देखनी चाहिए।

18. मार्गदर्शकों की टीम बनाना हमारा लक्ष्य:

मेरे अपने विचार में दुनिया ठीक दिशा में नहीं जा रही है। भौतिक उन्नति की गति तो बहुत तेज है लेकिन नैतिक पतन भी उतनी ही तेज गति से हो रहा है। इस समस्या का समाधान ना कोई अकेला व्यक्ति कर सकता है और नहीं उसे इस तरह का दावा करना चाहिए। इस समस्या के समाधान में हमारी भारतीय संस्कृति की वर्ण व्यवस्था ही एक साथ मिलकर कोई समाधान कर सकती है। इस समाधान में चारों वर्णों की अलग-अलग किंतु संयुक्त भूमिका होगी। इस बदलाव में मार्गदर्शक की भूमिका समाधान प्रस्तुत करने तक होगी मार्गदर्शक एक ब्राह्मण के रूप में विचार

मंथन करेगा निष्कर्ष निकलेगा समाज को वह निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा अन्य तीन वर्ण रक्षक, पालक और सेवक अपनी-अपनी भूमिका में इस समस्या के समाधान में सक्रिय होंगे। दुर्भाग्य से मार्गदर्शकों का अभाव हो जाने के कारण रक्षक, पालक और सेवक ही इस प्रकार की समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं जो पूरी तरह असंभव है इसलिए मैं कल भी आपको लिखा था और आज पुनः लिख रहा हूं कि जब तक हम विचारवान मार्गदर्शक अर्थात ब्राह्मणों को मजबूत नहीं करेंगे, जब तक हम ब्राह्मणों की कमी को पूरा नहीं करेंगे, जब तक हम मार्गदर्शक का विकल्प समाज को नहीं देंगे, तब तक समाज की वर्तमान दुर्दशा का कोई समाधान नहीं निकल सकता है। मैं आप सब लोगों का आह्वान करना चाहता हूँ कि आप में से जो भी लोग इस भूमिका में सक्रिय होने की क्षमता रखते हैं, वे सब इस अभियान से जुड़े। हम एक मार्गदर्शकों की अच्छी टीम दुनिया को देना चाहते हैं।

19. **राजनीतिक हों या सामाजिक, समस्याओं का समाधान केवल समाज के पास:**

हम प्रातःकालीन चर्चा में अपनों से अपनी बात के अंतर्गत नई समाज व्यवस्था पर चर्चा कर रहे हैं। नई समाज व्यवस्था के अंतर्गत दो दिशाओं में हमें निष्कर्ष निकालने होंगे। पहला है राजनीतिक और दूसरा है सामाजिक। राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत दुनिया में लोकतंत्र और तानाशाही के बीच टकराव चल रहा है दोनों में कुछ अच्छाइयां और कुछ बुराइयां हैं। तानाशाही में गुलामी होती है और लोकतंत्र में अराजकता। दोनों ही आदर्श स्थिति नहीं है इसलिए हम लोगों ने एक तीसरा मार्ग सुझाया है जो लोक स्वराज का है। लोकस्वराज में गुलामी भी नहीं होगी और अराजकता भी नहीं होगी। फिर भी अभी लोकस्वराज्य बहुत दूर की बात है इसलिए हम लोग तानाशाही की अपेक्षा लोकतंत्र को कम बुरा मानते हैं। दूसरी बात है सामाजिक व्यवस्था। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत तंत्र ही समाज का कार्य कर रहा है, तंत्र के पास सारी शक्ति केंद्रित हो गई है। तंत्र और लोक के बीच हम एक बदलाव करना चाहते हैं। लोक को कमजोर करके तंत्र को सारी शक्ति अगर दे दिया है तो यह अप्रत्यक्ष रूप से गुलामी ही मानी जाएगी और तंत्र की हमें आवश्यकता भी है इसलिए हम लोग लोक और तंत्र के बीच एक मार्ग सुझा रहे हैं और वह है संयुक्त परिवार व्यवस्था। संयुक्त परिवार व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था की पहली इकाई मान लिया जाना चाहिए। इसे तंत्र भी स्वीति प्रदान कर दे। संयुक्त परिवार व्यवस्था को अगर तंत्र व्यवस्था की पहली इकाई मान लेगा तो यह समस्या सुलझ जाएगी। इस तरह हम राजनीतिक और सामाजिक दोनों दिशाओं में एक विकल्प समाज के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

सुबह की चर्चा को आगे बढ़ाते हुए यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि हम लोगों की रुचि संपूर्ण व्यवस्था परिवर्तन में है सिर्फ राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तन नहीं और राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तन में भी संविधान की स्वतंत्रता में है, सत्ता परिवर्तन में बिल्कुल नहीं। हमें प्रदेशों में कौन जीतता है या हारता है, इसमें कोई रुचि नहीं है। केंद्र सरकार में भी कौन जीतता है और कौन हारता है, इसमें भी 4 जून के बाद हमारी रुचि समाप्त हो गई है लेकिन हमारी राजनीतिक रुचि इस बात में है कि साम्यवाद हमारे दुनिया की और खासकर भारत की सबसे अधिक खतरनाक विचारधारा है। इस्लाम का भी संगठित स्वरूप बहुत अधिक घातक है और यदि साम्यवाद तथा इस्लाम एक साथ मिल जाए तो उसे

तो एक क्षण भी स्वीकार नहीं करना चाहिए, इसलिए हमारी रुचि इस बात में जरूर है कि नेहरू परिवार को इस देश की राजनीति से समाप्त होना चाहिए। इसके लिए जो भी व्यक्ति या दल आगे आएगा हम उस दल के आगे बढ़ने की कामना करेंगे लेकिन हम अब भारतीय जनता पार्टी या नरेंद्र मोदी से भी संविधान के स्वतंत्रता की उम्मीद नहीं कर रहे हैं, इसलिए हमारे देश का संविधान स्वतंत्र हो इस बात के लिए हम पूरी ताकत से जन जागरण करेंगे। साथ ही हमारा यह भी प्रयत्न है कि हम सामाजिक मामलों में लगातार समाज सुधार की चर्चा करते रहें क्योंकि यदि सामाजिक बुराइयां दूर नहीं होगी तो हम नई व्यवस्था की दिशा में नहीं बढ़ पाएंगे इसलिए हम राजनीतिक चर्चा के साथ-साथ सामाजिक विषयों पर भी लगातार चर्चा कर रहे हैं। मैं आपको यह बात भी स्पष्ट कर दूं कि हम सामाजिक समस्याओं की चर्चा तक सीमित नहीं है हम उसके कर्म पर भी शोध कर रहे हैं और कर्म के साथ-साथ समाधान भी समाज को दे रहे हैं।

20. अपराध, अनैतिक और गैर-कानूनी किसे माना जाये:

प्रातःकालीन सत्र में सामाजिक चर्चा के अंतर्गत अपराध, अनैतिक और गैर-कानूनी के अंतर को समझने की कोशिश करेंगे। यह तीनों बिल्कुल अलग-अलग होते हैं लेकिन नासमझ लोगों ने और राजनेताओं ने बुरी नीयत से इन तीनों को एक में मिलाकर सब गड़बड़ कर दिया। आज 99ः लोग इन तीनों के बीच का अंतर समझते ही नहीं है इसके कारण बहुत बड़ा भ्रम पैदा हो गया है। हमारी व्यवस्था तीन आधारों पर चलती है एक है- प्रति प्रदत्त, दूसरी है समाज प्रदत्त और तीसरी है संविधान प्रदत्त। प्रति प्रदत्त हमारे जो अधिकार होते हैं उन्हें हम मौलिक अधिकार कहते हैं, संविधान प्रदत्त अधिकारों को संवैधानिक अधिकार कहते हैं और समाज प्रदत्त अधिकार हमारे सामाजिक अधिकार माने जाते हैं। प्रकृति प्रदत्त मौलिक अधिकारों का उल्लंघन ही अपराध होता है, इसके अतिरिक्त कोई कार्य अपराध हो ही नहीं सकता। समाज द्वारा बनाए गए नियमों का उल्लंघन ही अनैतिक होता है, हर अपराध अनैतिक भी होता है किंतु हर अनैतिक अपराध नहीं होता। हमारे संविधान प्रदत्त अधिकारों का उल्लंघन गैर-कानूनी होता है, अनैतिक नहीं होता। इस तरह अपराध, गैर-कानूनी और अनैतिक का अंतर समझने की जरूरत है। जब से हम गुलाम हुए, तब से राजनेताओं ने बुरी नीयत से सरकार के आदेशों के उल्लंघन को ही अपराध घोषित कर दिया जबकि वह गैर-कानूनी होता है, अपराध नहीं होता। क्राइम, इलीगल और इम्मोरल इन तीनों को अलग-अलग समझने की जरूरत है। दुर्भाग्य से हम ना तो इन्हें समझते हैं, ना समझना चाहते हैं इसलिए जब तक हम इन तीनों को अलग-अलग नहीं समझेंगे, तब तक हम कोई समाधान नहीं कर सकेंगे। अपराध नियंत्रण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। हम अपराध नियंत्रण के लिए सबसे पहले गैर-कानूनी और अनैतिक कार्यों को अलग करें। मैं आपसे चाहता हूँ कि आप इस विषय में समझने और समझाने की कोशिश करें।

21. देश की सुरक्षा हेतु साम्यवाद से बचना बहुत जरूरी:

दुनिया में साम्यवादी कितना अधिक चालाक होता है, इसकी आज तक कोई सीमा नहीं बन सकी है। भारत में पंडित नेहरू सबसे बड़े साम्यवादी विचारों के संवाहक माने जाते हैं। पंडित नेहरू कितने चालाक थे, यह बात इतने वर्षों बाद भी आज तक साफ नहीं हो सकी है। पंडित नेहरू ने किस तरह लॉर्ड माउंटबेटन को अपने नियंत्रण में लिया, पंडित नेहरू ने किस तरह गांधी को धोखा दिया, यह बात आज तक साफ नहीं हो सकी है। पंडित नेहरू ने किस प्रकार गांधी से किनारा किया, यह भेद भी आज तक नहीं खुल सका। क्या नेहरू और सावरकर या नेहरू और गोडसे के बीच भी कोई संबंध था, इस पर आज तक संदेह ही बना हुआ है। पंडित नेहरू के विषय में यह कहा जाता है कि उनका इस्लाम के प्रति अधिक आकर्षण था। यह बात मेरे विचार से बिल्कुल गलत है। पंडित नेहरू पूरी तरह कम्युनिस्ट थे और कम्युनिस्ट होने के कारण किसी राजनीति के अंतर्गत उन्होंने इस्लाम से भी अच्छे संबंध बनाकर रखे थे। पंडित नेहरू ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में किस तरह चीन को रियायतें दी और चीन ने भारत की बहुत बड़ी भूमि पर कब्जा कर लिया, यह बात भी अब तक साफ नहीं हो सकी है क्योंकि उस समय महत्वपूर्ण पद पर पंडित नेहरू ने कृष्ण मेनन सरीखे कम्युनिस्ट को बिठा रखा था। पंडित नेहरू ने किस तरह कश्मीर पाकिस्तान को देने की योजना बनाई, उस योजना को सिर्फ पटेल ही रोक सके अन्यथा कश्मीर भी पाकिस्तान का भाग बन जाता। पटेल के मरने के बाद भी नेहरू परिवार कश्मीर को पाकिस्तान का भाग बनाने की योजना पर निरंतर चलते रहे। पंडित नेहरू ने किस तरह सारे उद्योगपतियों को बर्बाद करके सब कुछ अपने नियंत्रण में किया और चीन से आयात बढ़ाने की सारी तिकड़म की, यह बात पूरा देश समझ चुका है। वह तो मनमोहन सिंह को धन्यवाद है कि उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को बचा लिया। इस तरह मैं यह कह सकता हूँ कि पंडित नेहरू 100% कम्युनिस्ट थे, शत-प्रतिशत बुद्धिजीवी थे, शत-प्रतिशत चालाक थे। उन्हें ना धर्म से कोई मतलब था, ना राष्ट्र से कोई मतलब था, ना समाज से कोई मतलब था। उन्हें तो सिर्फ मतलब था अपनी राजनीतिक सत्ता से जो साम्यवाद का एकमात्र उद्देश्य होता है। सुरक्षित दुनिया के लिए साम्यवाद से बचना बहुत जरूरी है।

22. दल मुक्त राजनीति और निर्दलीय लोकतंत्र:

दोपहर के सत्र में हम संवैधानिक विषय पर चर्चा करते हैं। आज भारत में राजनीतिक दलों ने दो गुटों में बंट कर जिस तरह सारे समाज का शोषण किया है, वह पूरी तरह साफ-साफ दिख रहा है। यह दोनों सड़कों पर दिन-रात नाटक करते रहते हैं। यह दोनों ग्रुप एक साथ मिलकर सारी संपत्ति का उपभोग करना चाहते हैं और नाटक करके हम लोगों का मनोरंजन भी करते रहते हैं जिससे हम उनके मनोरंजन में फंसकर अपना शोषण कराते रहें। मैं दो-तीन दिनों से देख रहा हूँ कि दिल्ली में एक निवास-स्थल को लेकर कितना बड़ा नाटक खेला जा रहा है, उस मकान में कौन रहे यह कोई सामाजिक चर्चा का विषय नहीं है, यह संवैधानिक और राजनीतिक

विषय भी नहीं है। यदि उसमें अरविंद केजरीवाल थे और फिर से कोई मुख्यमंत्री आ जाता है तो यह कोई ऐसा मामला नहीं है जिसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया जाए। यदि किसी मुख्यमंत्री को नहीं मिलता है तो उसको भी इतना उछल-कूद करने की क्या जरूरत है। हम उत्तर प्रदेश में भी देख रहे हैं कि जयप्रकाश नारायण की मूर्ति पर फूल चढ़ाने के नाम पर अनावश्यक झगड़ा हो रहा है। यदि जयप्रकाश नारायण का सम्मान करना है तो वह कहीं भी किया जा सकता है और यदि अखिलेश यादव वही सम्मान करने पर अड़े हुए हैं तो उसकी बैरिकेडिंग करने की क्या जरूरत है। इसी तरह हम कोलकाता में भी देख रहे हैं कि यह राजनीतिक दल दो गुटों में बंठकर निर्भया से अभया तक दुकानदारी करते चले आ रहे हैं। ना निर्भया मामले में कोई समाधान निकला न अभया मामले में कोई निकलने वाला है लेकिन इन राजनीतिक दुकानदारों की दुकानदारी निर्भया से भी बहुत मजबूत हुई थी और अभया से भी मजबूत होगी। इसलिए अब समाज के सामने यह विचार करने का समय है कि राजनीति के नाम पर पक्ष विपक्ष में बंटकर इन दुकानदारी करने वालों से कैसे पिंड छुड़ाया जाए। समय आ गया है कि हम दल मुक्त राजनीति और निर्दलीय लोकतंत्र पर विचार करें, जैसा कि स्वतंत्रता के समय किया गया था।

23. व्यक्ति सुधार के दो कारखाने:

वर्तमान भारत में हम व्यक्ति सुधार के दो अलग-अलग कारखाने देख रहे हैं। एक कारखाना जेल है जहां व्यक्ति को सुधारने के लिए भेजा जाता है, दूसरा कारखाना राजनीति है जहां हम व्यक्ति को चरित्र निर्माण और समाज सेवा का पाठ पढ़ाते हैं। यह दोनों कारखाने स्वतंत्रता के बाद लगातार 70 वर्षों से अब तक चल रहे हैं और दोनों को भारत में लगातार बढ़ावा मिल रहा है लेकिन परिणाम क्या हो रहा है। जो व्यक्ति जेल में चला जा रहा है वह जेल से निकलकर बहुत बड़ा अपराधी बन जा रहा है, जेल में रहते हुए उसे अपराध करने की ट्रेनिंग दी जाती है, वह अपराधियों का गिरोह बना लेता है वह अपराधियों से अपराध करना सीख लेता है वह जेल में यह भी सीखता है किस तरह पुलिस और न्यायालय को धोखा दिया जाए। कई अपराधी तो जेल में रहकर ही अपराधों की योजना बनाते हैं और अनेक तो बाहर में अपराध संचालित भी करते हैं और खुद जेल में रहते हैं। यह भारत की जेल का वातावरण है जिस जेल पर हम इतना विश्वास करते हैं। एक दूसरे कारखाने की बात करिए तो राजनीति में जो चला गया वह जीवन भर सफलतापूर्वक धूर्तता कर सकेगा, वह सारे देश को आराम से लूट सकेगा, धोखा दे सकेगा। राजनीति में रहकर वह यह पूरी तरह सीख जाता है कि किस तरह दुनिया को धोखा दिया जा सकता है। राजनीति में रहकर उसकी गंदी आदत पड़ जाती है, वह समाज सेवा

नहीं समाज को लूटने का सारा धंधा सीखता है और जीवन भर झूठ बोलता है। समाज को ठगता है, लूटता है और खादी की टोपी और खादी के कपड़े पहन कर धोखा देता है। अगर कोई राजनेता जेल चला जाता है तो वहां तो उसे और ज्यादा प्रशिक्षण हो जाता है क्योंकि जेल से निकलते ही वह शहीद मान लिया जाता है। जेल और राजनीति इन दोनों का इतना संबंध है कि अपराधी अब सीधा राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं और राजनीति अपराधियों को संरक्षण दे रही है। इसलिए समय आ गया है कि हम जेल और राजनीति इन दोनों विषयों पर गंभीरता से सोचें। इन दोनों को क्या माना जाए, यह हमारे चिंतन का विषय होना चाहिए।

24. भारत को खोखला कर रहे विदेशी लोग:

आज के तीसरे सत्र में हम इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि किस प्रकार भारत में विदेशी लोग घुसकर भारत को खोखला कर रहे हैं और उन्हें भारतीय लोग ही शह दे रहे हैं। कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी की सरकार है यह सब जानते हैं। कर्नाटक के एक जिला उडूपी के एक गांव में जांच की गई। उस गांव में अब तक आठ ऐसे लोग मिल चुके हैं जो कि पाकिस्तान या बांग्लादेश से भाग कर आए हैं और उन सब ने भारत में अपना आधार कार्ड और राशन कार्ड भी बनवा लिया है। इन आठ लोगों का भी पता इसलिए चला कि इस गांव के आसपास के गांव में अन्य 32 ऐसे लोग पकड़े गए हैं जो पाकिस्तान से भाग कर आए हैं और उन सब ने भी यहां आधार कार्ड और राशन कार्ड भी बनवा लिया है। इस बात की जांच की जा रही है कि आधार कार्ड बनवाने में किन नेताओं का हाथ है। लेकिन इस बात के पुख्ता सबूत मिल रहे हैं कि उन लोगों के आधार कार्ड, पहचान पत्र और राशन कार्ड वगैरह बनवाने में भारतीय नेताओं ने ही मदद की है। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि हमारे भारत में इस प्रकार विदेशी लोग घुसपैठ कर रहे हैं और हमारी भारत सरकार इसलिए नहीं बोल पा रही है कि इन विदेशी घुसपैठियों के पक्ष में कांग्रेस पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी खुलकर खड़ी है। मुसलमान तो उनका साथ देंगे ही क्योंकि वह पाकिस्तानी हैं बांग्लादेशी हैं मुसलमान हैं वह तो धार्मिक आधार पर मदद करते हैं लेकिन यह कांग्रेसी और कम्युनिस्ट राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस प्रकार के लोगों की मदद करते हैं। यहां तक कि यह बेशर्म लोग तो खुलकर कहते हैं कि पाकिस्तान और बांग्लादेश के अवैध लोगों को भारत में आने दिया जाए रहने दिया जाए, उनको किसी प्रकार की छेड़छाड़ ना की जाए। इसलिए अब समय आ गया है कि हम इस प्रकार घुसपैठ करने वालों के विरुद्ध ही नहीं बल्कि उनकी मदद करने वाले या इनका समर्थन करने वालों की भी पहचान करें और ऐसे लोगों को देशद्रोही घोषित करें।

25. आतंकवादियों का सफाया इजरायल का लक्ष्य:

आतंकवादी समूह प्रमुख की इजरायल द्वारा हत्या की जाने के बाद दुनिया भर से अलग-अलग प्रतिक्रियाएं आ रही है। कुछ शिया देश उसके मरने पर दुरूख मना रहे हैं क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि अब इजराइल से मुकाबला करना और कठिन हो जाएगा इन शिया बहुल देशों ने यह कोशिश की थी कि आतंकवाद के भरोसे ही हम इजरायल और सारी दुनिया में शिया का शासन स्थापित कर सकते हैं लेकिन उनका सपना चूर-चूर हो रहा है। सुन्नी मुसलमान के देश इस मामले में बिल्कुल चुप है कोई भी देश खुलकर हिजबुल्लाह के समर्थन में खड़ा नहीं हुआ है। भारत के भी सुन्नी मुसलमान इस मामले में चुप है। शिया मुसलमान ने कई जगह हिजबुल्लाह के समर्थन में प्रदर्शन किए हैं। लखनऊ के शिया मुसलमान ने तीन दिनों के शोक की भी घोषणा की है लेकिन आमतौर पर सुन्नी मुसलमान बिल्कुल चुप है। यह आवश्यक है कि राहुल गांधी इस मामले में बहुत सक्रिय है क्योंकि इंडिया गठबंधन को ऐसा महसूस हो रहा है कि यदि मुसलमान में इस तरह दो गुट बन जाएगा तो उनके सारे सपने चूर-चूर हो जाएंगे इसलिए राहुल गांधी और इंडिया गठबंधन लगातार प्रयत्नशील है कि भारत का मुसलमान एकजुट होकर इजरायल के खिलाफ खड़ा हो। उसमें शिया-सुन्नी का कोई भेद न हो। भारत के कुछ लोगों ने इसराइल को हथियार निर्यात भी किया था, इस मामले में भी इंडिया गठबंधन के लोगों ने सुप्रीम कोर्ट तक दौड़ लगाई है। मैं मानता हूँ भारत का मुसलमान राहुल गांधी के नेतृत्व में एकजुट रहने का प्रयास करेगा लेकिन दुनिया का प्रभाव भारतीय मुसलमान पर भी पड़ना निश्चित है। इसराइल बहुत सोचकर कदम रख रहा है। उसने लेबनान पर कोई आक्रमण नहीं किया है सिर्फ चुन-चुन कर आतंकवादी मारे जा रहे हैं। उसने फिलिस्तीन पर भी कोई आक्रमण नहीं किया है सिर्फ हमास पर आक्रमण किया है। अब इजरायल यमन के आतंकवादियों को भी मारने की ओर आगे बढ़ रहा है लेकिन वहां भी इजरायल सावधान है कि यमन पर आक्रमण ना किया जाए सिर्फ आतंकवादियों को मारा जाए, यह बहुत ही सावधानी का काम है कि किसी बड़ी आबादी में सिर्फ आतंकवादी ही मरे आम लोगों का बहुत ज्यादा नुकसान ना हो इजरायल इस मामले में पूरी तरह सावधान है। इसलिए दुनिया में ना हमास के समर्थन मिल रहा है ना हिजबुल्लाह को समर्थन मिल रहा है और न हूती को समर्थन मिलेगा। इक्का-दुक्का राहुल गांधी सरीखे लोग भले ही इन मुस्लिम आतंकवादियों का समर्थन कर दें, यह अलग बात है।

जूम चर्चा:-

कल 21 अक्टूबर, दिन सोमवार की रात्रिकालीन चर्चा कार्यक्रम में हम लोगों की चर्चा का मुख्य विषय था कि समाज के अच्छे लोग मिलकर समाज में जो भी व्यवस्था बनाते हैं, धूर्त लोग उसे व्यवस्था की कमजोरी का लाभ उठा-उठा कर उस व्यवस्था में ही मजबूती प्राप्त कर लेते हैं। यह कोटेशन समाज की दयनीय हालातों को उद्धृत करता है। समाज के अच्छे लोग हमेशा ही कोई नई व्यवस्था बनाने में अपनी अग्रणी भूमिका निभाते हैं लेकिन कालांतर में व्यवस्था की कुछ खामियां का लाभ समाज के धूर्त लोग उठाना शुरू कर देते हैं और लाभ उठा-उठा कर वह मजबूती प्राप्त कर लेते हैं। दुनिया में बदलाव के जितने भी प्रयास हुए हैं, सब में प्राय: एक बात सामान्य दिखती है कि व्यवस्था बदलने में वहां के पढ़े-लिखे विद्वान, सज्जन, प्रोफेसर, दार्शनिक, वकील, बुद्धिजीवी, डॉक्टर, लेखक, साहित्यकार और नाटककार इन सब की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बुद्धिजीवी ही क्रांति की रूपरेखा तैयार करते हैं। क्रांति की चिंगारी जब भड़कती है, जब बदलाव की बयार समाज में चलती है तो इसमें आम जन भी शामिल हो जाते हैं और मौका देखकर अपराधी तत्व भी इसमें शामिल होते हैं। जहां सामान्य लोगों का मतलब व्यवस्था में परिवर्तन लाना है, वही धूर्त, चालाक और अपराधियों का मतलब व्यवस्था से लाभ उठाना

होता है। अंग्रेजों की गुलामी काल में ही देखा जाए तो क्रांतिकारी जेल जाते थे, अंग्रेजों का अत्याचार सहते थे और रेल, तार, डाक, बिजली के खंभे उखाड़ने में अपराधियों का भी सहयोग होता था, जबकि उनके मन में व्यवस्था में बदलाव की कोई भावना नहीं होती थी। यह तो उस अराजकता की स्थिति का लाभ उठाने में माहिर होते हैं। आजादी मिलने के बाद यह लोग स्वतंत्रता सेनानियों को मिलने वाले पेंशन पाने में भी आगे थे। राष्ट्रीय आजादी की लड़ाई खत्म होने के बाद जब देश का अपना संविधान बना, अपनी सरकार बनी तो उसमें भी व्यवस्था का लाभ उठाने वाले समाज तोड़क, परिवार तोड़क व्यक्ति हमेशा मजबूत होते गए। उन्होंने समाज को वर्गों में बांटा और अपने एक बहुत बड़े वर्ग के नेता बन गए। हर वर्ग में, हर वर्ण में, हर जाति में ऐसे तत्व मौजूद होते हैं जो व्यवस्था की कमजोरियों का लाभ उठाते हैं। जयप्रकाश नारायण जी के संपूर्ण क्रांति के समय भी यही देखा गया, अन्ना हजारे के राष्ट्रीय आंदोलन का लाभ उठाने वाले ऐसे ही तत्व समाज में सम्मानित होते हैं। कभी भी सामाजिक लड़ाई अपना अधिकार हासिल नहीं कर सकती है बल्कि इनके प्राप्त अधिकार एवं सम्मान ऐसे लोग हाईजैक कर लेते हैं जिनका व्यवस्था परिवर्तन में या व्यवस्था निर्माण में कोई हाथ नहीं होता है।

हम लोग आज चर्चा के क्रम में समाज द्वारा बनाई गई व्यवस्था से लाभ उठाने वाले धूर्तों की चालाकी पर बातचीत कर रहे हैं। सृष्टि के प्रारंभ से ही धूर्तों और सज्जनों के बीच हमेशा टकराव होता रहा है। इसे सज्जनों की शराफत कहा जाए या उनकी मूर्खता कि वह समाज को एकजुट नहीं कर पाते हैं। दूसरी तरफ धूर्तों की सफलता कहें या उनकी चालाकी कि वह समाज के अधिकांश लोगों को अपने पक्ष में खड़े कर लेते हैं। समाज में तीन तरीके के लोग हैं - एक हैं सज्जन अथवा शरीफ, दूसरे हैं असामाजिक और तीसरे हैं समाज विरोधी। समाज में समाज विरोधियों की संख्या 2% से ज्यादा नहीं होती है, असामाजिक कार्य करने वाले यानी मध्यम श्रेणी के लोग 70-75% तक होते हैं और 10 से 15-20% शरीफ लोग या समझदार लोग होते हैं। शरीफ लोग जितनी दूरी असामाजिक लोगों से बनाकर रखते हैं, समाज विरोधियों से ही उतनी ही दूरी बनाकर रखते हैं। कुल मिलाकर असामाजिक और समाज विरोधी मिलकर 80-85% हो जाते हैं और सज्जनों की संख्या मात्र 10 से 15% तक होती है। इस हालत में बहुमत धूर्तों के पास आ जाता है। परिस्थितियों के आधार पर निर्णय करना चाहिए लेकिन समझदार कहे जाने वाले यह लोग परिस्थितियों को समझने में नाकाम रहते हैं। देखा जाए तो वर्तमान समय में भारत में 98% अच्छे लोग हैं लेकिन फिर भी दो प्रतिशत आपराधिक तत्व अपना वर्चस्व कायम कर लेते हैं। इसका कारण है कि शरीफ और असामाजिक के बीच कभी तालमेल नहीं बन पाता है। ज्ञान घट रहा है और शिक्षा बढ़ रही है। यह पढ़े-लिखे शिक्षित कहे जाने वाले मूर्ख ही तो हैं जो परिस्थितियों को नहीं समझ पा रहे हैं। एक बात और है कि सज्जनों को इकट्ठा होने में बहुत समय लगता है लेकिन दूर्जनों के लिए ऐसी कोई बात नहीं है। भारत की जो वर्ण व्यवस्था थी यदि वह अपने व्यावहारिक स्वरूप में होता तो समाज की ऐसी स्थिति नहीं हो सकती थी। लेकिन आज ना समाज के मार्गदर्शक न रक्षक, पालक और सेवक ही कोई अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य पर खरे उतरते हैं।

समाज सुधार का प्रयास स्वामी दयानंद ने भी किया, महात्मा गांधी ने भी किया और हाल-फिलहाल एक सशक्त उदाहरण श्री राम शर्मा आचार्य जी का भी दिया जा सकता है लेकिन बदलते समय के अनुसार उनकी संस्थाओं ने अपने में बदलाव नहीं कर पाया और विचार मंथन की सारी प्रक्रिया अधूरी रह गई जिसका परिणाम हुआ कि न ही कोई समाज के दिशा निर्देशन के लिए विचारक पैदा हो सकते हैं और ना ही अच्छे विद्यार्थियों को विचारक बनने की कोई प्रेरणा मिलती है। कोई नए विचारक बनने की संभावना भी दिखती है तो उन्हें कोई ना कोई संस्थान अपनी घेरे में ले लेता है। आज धर्मगुरु भी विश्वामित्र, वशिष्ठ या विदुर बनने की नियत नहीं रखते हैं उन्हें तो राम बनने से मतलब रह जाता है ताकि यश, मान-सम्मान, सेवा, प्रतिष्ठा सब कुछ वह हासिल कर सके। कहा जाए तो समाज में वर्णसंकरता आ चुकी है जिसके कारण समाज के अच्छे लोग भी अपनी अच्छी व्यवस्था को बचाकर नहीं रख पा रहे हैं और व्यवस्था की कमजोरी का लाभ उठाकर धूर्त लोग उस व्यवस्था में ही मजबूती प्राप्त कर लेते हैं।

संजय तांती, सम्पर्क नं.- 8349326292.